रविवार 8 नवंबर, 2020

विषय — ***आदम और पतित आदमी***

स्वर्ण पाठ: इफिसियों 5 : 14

"*इस कारण वह कहता है, हे सोने वाले जाग और मुर्दों में से जी उठ; तो मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी॥*"

उत्तरदायी अध्ययन: **1 कुरिन्थियों 15 : 34, 47, 49, 51, 53, 57**

34 धर्म के लिये जाग उठो और पाप न करो; क्योंकि कितने ऐसे हैं जो परमेश्वर को नहीं जानते॥
47 प्रथम मनुष्य धरती से अर्थात मिट्टी का था; दूसरा मनुष्य स्वर्गीय है।
49 और जैसे हम ने उसका रूप जो मिट्टी का था धारण किया वैसे ही उस स्वर्गीय का रूप भी धारण करेंगे॥
51 देखे, मैं तुम से भेद की बात कहता हूं: कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे।
53 क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले।
57 परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. उत्पत्ति 1: 1, 2, 26-28, 31 (*से 1st.*)

1 आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।
2 और पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी; और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था: तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डलाता था।

26 फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की
मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगने वाले जन्तुओं
पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।
27 तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने
उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।
28 और परमेश्वर ने उन को आशीष दी: और उन से कहा, फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको
अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब
जन्तुओ पर अधिकार रखो।
31 तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है।

2. उत्पत्ति 2 : 6, 7, 21, 22

6 तौभी कोहरा पृथ्वी से उठता था जिस से सारी भूमि सिंच जाती थी
7 और यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया;
और आदम जीवता प्राणी बन गया।
21 तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भारी नीन्द में डाल दिया, और जब वह सो गया तब उसने उसकी एक
पसली निकाल कर उसकी सन्ती मांस भर दिया।
22 और यहोवा परमेश्वर ने उस पसली को जो उसने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया; और उसको
आदम के पास ले आया।

3. यशायाह 43: 1 (इस प्रकार), 2 (*से 2nd* ;), 3 (*से* :)

1 …हेइस्राएल तेरा रचने वाला और हे याकूब तेरा सृजनहार यहोवा यों कहता है, मत डर, क्योंकि मैं ने तुझे
छुड़ा लिया है; मैं ने तुझे नाम ले कर बुलाया है, तू मेरा ही है।
2 जब तू जल में हो कर जाए, मैं तेरे संग संग रहूंगा और जब तू नदियों में हो कर चले, तब वे तुझे न डुबा
सकेंगी; जब तू आग में चले तब तुझे आंच न लगेगी, और उसकी लौ तुझे न जला सकेगी।
3 क्योंकि मैं यहोवा तेरा परमेश्वर हूं, इस्राएल का पवित्र मैं तेरा उद्धारकर्ता हूं।

4. भजन संहिता 49 : 20

20 मनुष्य चाहे प्रतिष्ठित भी हों परन्तु यदि वे समझ नहीं रखते, तो वे पशुओं के समान हैं जो मर मिटते हैं॥

5. मत्ती 9 : 35 (*से 3rd* ,)

35 और यीशु सब नगरों और गांवों में फिरता रहा और उन की सभाओं में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता।

6. मत्ती 14 : 35 (उन्होने भेजा) *केवल*, 35 (और), 36

35 … भेज दिया… और सब बीमारों को उसके पास लाए।
36 और उस से बिनती करने लगे, कि वह उन्हें अपने वस्त्र के आंचल ही को छूने दे: और जितनों ने उसे छूआ, वे चंगे हो गए॥

7. यूहन्ना 11 : 1, 4, 11, 41-44

1 मरियम और उस की बहिन मारथा के गांव बैतनिय्याह का लाजर नाम एक मनुष्य बीमार था।
4 यह सुनकर यीशु ने कहा, यह बीमारी मृत्यु की नहीं, परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिये है, कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो।
11 उस ने ये बातें कहीं, और इस के बाद उन से कहने लगा, कि हमारा मित्र लाजर सो गया है, परन्तु मैं उसे जगाने जाता हूं।
41 तब उन्होंने उस पत्थर को हटाया, फिर यीशु ने आंखें उठाकर कहा, हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि तू ने मेरी सुन ली है।
42 और मै जानता था, कि तू सदा मेरी सुनता है, परन्तु जो भीड़ आस पास खड़ी है, उन के कारण मैं ने यह कहा, जिस से कि वे विश्वास करें, कि तू ने मुझे भेजा है।
43 यह कहकर उस ने बड़े शब्द से पुकारा, कि हे लाजर, निकल आ।
44 जो मर गया था, वह कफन से हाथ पांव बन्धे हुए निकल आया और उसका मुंह अंगोछे से लिपटा हुआ तें यीशु ने उन से कहा, उसे खोलकर जाने दो॥

8. अय्यूब 33 : 4

4 मुझे ईश्वर की आत्मा ने बनाया है, और सर्वशक्तिमान की सांस से मुझे जीवन मिलता है।

9. रोमियो 8 : 9 (तु), 11 (अगर)

9 …जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं।

11 …यदि उसी का आत्मा जिस ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ है; तो जिस ने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा।

10. इफिसियों 4 : 4-7, 13-15, 21-24

4 एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है।
5 एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा।
6 और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपरऔर सब के मध्य में, और सब में है।
7 पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण से अनुग्रह मिला है।
13 जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं।
14 ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से उन के भ्रम की युक्तियों की, और उपदेश की, हर एक बयार से उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते हों।
15 वरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उस में जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ते जाएं।
21 वरन तुम ने सचमुच उसी की सुनी, और जैसा यीशु में सत्य है, उसी में सिखाए भी गए।
22 कि तुम अगले चालचलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो।
23 और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ।
24 और नये मनुष्यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धामिर्कता, और पवित्रता में सृजा गया है॥

11. 1 यूहन्ना 3 : 2, 3

2 हे प्रियों, अभी हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उस को वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।
3 और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है।

12. लैव्यव्यवस्था 19 : 2 (तु)

2 तुम पवित्र बने रहो; क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूं।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 516 : 24-29

उत्पत्ति 1: 27. *तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।*

इस क्षणिक विचार पर जोर देने के लिए, यह दोहराया जाता है कि ईश्वर ने मनुष्य को अपनी छवि में बनाया, दिव्य आत्मा को प्रतिबिंबित करने के लिए।

2. 521 : 21-22, 26-29

उत्पत्ति 2: 6. *तौभी कोहरा पृथ्वी से उठता था जिस से सारी भूमि सिंच जाती थी*

उत्पत्ति के दूसरे अध्याय में ईश्वर और ब्रह्माण्ड के इस भौतिक दृष्टिकोण का विवरण है, एक कथन जो पहले दर्ज किए गए वैज्ञानिक सत्य के बिल्कुल विपरीत है।

3. 522 : 3-16 (*से*,)

पहले रिकॉर्ड का विज्ञान दूसरे के झूठ को साबित करता है। यदि एक सच है, तो दूसरा गलत है, क्योंकि वे विरोधी हैं। पहला रिकॉर्ड भगवान को सभी शक्ति और सरकार प्रदान करता है, और मनुष्य को भगवान की पूर्णता और शक्ति से संपन्न करता है। दूसरा रिकॉर्ड कालानुक्रमिक मनुष्य के रूप में उत्परिवर्तित और नश्वर, - जैसा कि देवता से टूट कर और स्वयं की कक्षा में परिक्रमा करते हुए। अस्तित्व, देवत्व से अलग, विज्ञान असंभव के रूप में समझाता है।

यह दूसरा रिकॉर्ड अचूक रूप से अपने बाह्य रूपों में त्रुटि का इतिहास देता है, जिसे जीवन और बुद्धि कहा जाता है। यह पेंटिज्म को रिकॉर्ड करता है, दिव्य आत्मा की सर्वोच्चता के विपरीत; लेकिन इस राज्य को अस्थायी घोषित किया जाता है और यह आदमी नश्वर हो जाता है,

4. 292 : 31 (यीशु)-2

यीशु ने दिखाया कि एक नश्वर मनुष्य मर्दानगी का वास्तविक सार नहीं है, और यह कि असत्य सामग्री मृत्यु दर वास्तविकता की उपस्थिति में गायब हो जाती है।

5. 493 : 28-2

यदि यीशु ने मौत के सपने, भ्रम से लाजर को जगाया, तो यह साबित हुआ कि मसीह गलत अर्थों में सुधार कर सकता है। शक्ति और दिव्य मन की इच्छा के इस घाघ परीक्षण पर संदेह करने की हिम्मत कौन करता है कि मनुष्य हमेशा के लिए अपनी पूर्ण स्थिति में बरकरार रहे, और मनुष्य की संपूर्ण क्रिया को संचालित करे?

6. 345 : 21-25, 28-30

कोई भी, जो भगवान के विचार और मानवता के बीच असंगति का अनुभव करने में सक्षम है, भगवान के आदमी और मनुष्य के पापी परिवार के बीच भेद (क्रिश्चियन साइंस द्वारा किए गए) को समझने में सक्षम होना चाहिए, जो उनकी छवि में बना है।

मानव का यह विचार, भौतिक कुछ भी नहीं है, जिसे विज्ञान विकसित करता है, शारीरिक मन को उत्तेजित करता है और यह कार्मिक मन की दुश्मनी का मुख्य कारण है।

7. 151 : 18 (यह)-24

रक्त, हृदय, फेफड़े, मस्तिष्क का जीवन, ईश्वर से कोई लेना-देना नहीं है। वास्तविक मनुष्य का प्रत्येक कार्य ईश्वरीय मन द्वारा संचालित होता है। मानव मन को मारने या ठीक करने की शक्ति नहीं है, और इसका परमेश्वर के मनुष्य पर कोई नियंत्रण नहीं है। जिस दिव्य मन ने मनुष्य को बनाया वह उसकी अपनी छवि और समानता को बनाए रखता है।

8. 470 : 11-5

ईश्वरीय विज्ञान अमूर्त कथन की व्याख्या करता है कि निम्नलिखित स्व-स्पष्ट प्रस्ताव द्वारा एक मन है: यदि ईश्वर, या अच्छा, वास्तविक है, तो बुराई, ईश्वर की अवांछितता, असत्य है। और बुराई केवल असत्य को वास्तविकता देकर वास्तविक प्रतीत हो सकती है। भगवान के बच्चों के पास एक मन है। अच्छाई बुराई में कैसे ढल सकती है, जब मनुष्य का मन ईश्वर, कभी पाप नहीं करता है? पूर्णता का मानक मूल रूप से भगवान और मनुष्य थे। क्या ईश्वर ने अपने स्वयं के मानक को नीचे रखा है, और क्या मनुष्य पाप में गिर गया है?

ईश्वर मनुष्य का निर्माता है, और, मनुष्य का ईश्वरीय सिद्धांत शेष पूर्ण है, दिव्य विचार या प्रतिबिंब, मनुष्य, परिपूर्ण रहता है मनुष्य ईश्वर के अस्तित्व की अभिव्यक्ति है। अगर कभी ऐसा क्षण आया जब मनुष्य ने ईश्वरीय पूर्णता को व्यक्त नहीं किया, तब एक ऐसा क्षण आया जब मनुष्य ने ईश्वर को व्यक्त नहीं किया, और फलस्वरूप एक समय था जब देवता अप्रसन्न थे — यह इकाई के बिना है। अगर मनुष्य ने पूर्णता खो दी है, तो उसने अपने

सिद्ध सिद्धांत, दिव्य मन को खो दिया है। यदि मनुष्य कभी भी इस सिद्ध सिद्धांत या मन के बिना अस्तित्व में था, तो मनुष्य का अस्तित्व एक मिथक था।

साइंस में ईश्वर और मनुष्य के संबंध, ईश्वरीय सिद्धांत और विचार अविनाशी हैं; और विज्ञान जानता है कि कोई चूक नहीं हुई है और न ही सद्भाव में लौटा लेकिन यह ईश्वरीय आदेश या आध्यात्मिक कानून रखता है, जिसमें भगवान और वह जो कुछ भी बनाता है वह परिपूर्ण और शाश्वत है, अपने सनातन इतिहास में अपरिवर्तित रहा है।

9. 475 : 7-14, 28-31

पवित्रशास्त्र हमें सूचित करता है कि मनुष्य परमेश्वर की छवि और समानता में बना है। सामग्री वह समानता नहीं है। आत्मा की समानता आत्मा के विपरीत नहीं हो सकती। मनुष्य आध्यात्मिक और परिपूर्ण है; और आध्यात्मिक और परिपूर्ण होने के कारण, उसे इस तरह से क्रिश्चियन साइंस में समझना चाहिए। आदमी विचार है, प्रेम की छवि; वह काया नहीं है।

मनुष्य पाप, बीमारी और मृत्यु के लिए अक्षम है। वास्तविक मनुष्य पवित्रता से विदा नहीं कर सकता, न ही परमेश्वर, जिसके द्वारा मनुष्य का विकास किया गया है, पाप करने की क्षमता या स्वतंत्रता प्रदान करता है।

10. 302 : 3-9, 19-24

भौतिक शरीर और मन लौकिक हैं, लेकिन वास्तविक मनुष्य आध्यात्मिक और शाश्वत है। असली आदमी की पहचान नहीं खोई है, लेकिन इस स्पष्टीकरण के माध्यम से पाया जाता है।; इसके लिए अस्तित्व और सभी पहचान के प्रति सचेत अविभाजित है और अपरिवर्तित रहता है। जब भगवान सब और अनंत काल के हैं, तब यह असंभव है कि मनुष्य को वास्तविक रूप से खोना चाहिए।

मनुष्य के पूर्ण, यहाँ तक कि पिता के रूप में भी पूर्ण होने का विज्ञान बताता है, क्योंकि आध्यात्मिक मनुष्य का आत्मा या मन, ईश्वर है, जो सभी का दिव्य सिद्धांत है, और क्योंकि यह वास्तविक व्यक्ति आत्मा के बजाय आत्मा के नियम द्वारा शासित है, न कि पदार्थ के तथाकथित नियमों द्वारा।

11. 304 : 14-18

पूर्ण पुरुष - भगवान द्वारा शासित, उनका सिद्ध सिद्धांत - पाप रहित और शाश्वत है।

सद्भाव इसके सिद्धांत द्वारा निर्मित होता है, इसके द्वारा नियंत्रित होता है और इसके साथ रहता है। ईश्वरीय सिद्धांत मनुष्य का जीवन है।

12. 476 : 28-32

जब यीशु ने परमेश्वर के बच्चों की बात की, न कि पुरुषों के बच्चों की, तो उन्होंने कहा, "परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है;" इसका मतलब है, सत्य और प्रेम वास्तविक मनुष्य में राज्य करता है, यह दर्शाता है कि भगवान की छवि में आदमी बेदाग और शाश्वत है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6